REFERENCE TO INCIDENT DURING THE PRESIDENT'S ADDRESS TO PARLIAMENT ON 18TH FEBRUARY, 1963

श्री गंगाशरण सिंह (बिहार) : सभापति जी, कल जब राष्ट्रपति महोदय ने सेंट्रल हाल में भाषण देना आरम्भ किया उस समय . . .

شری پیارے لال کریل ''طالب''
(اتر پردیش) : کشما کیجئے ایک لفظ میں کہنا چاہتا ہوں -

†[**श्री प्यारेलाल करील 'तालिब'** (उत्तर प्रदेश) : क्षमा कीजिए, एक लफ्ज़ मैं कहना चाहता हूं ।]

MR. CHAIRMAN: Please sit down.

شری پیارے لال کریل ''طالب'':
کل جو واقعہ ہوا اس کے سمبندھ میں اس سے پہلے کہ وہ کچھ کہیں میں یہ چاہتا ہوں کہ میں اپنی پوزیشن اور پارٹی کی پوزیشن کلیر کردوں صرف ایک منٹ میں -

†[**श्री प्यारेलाल कुरील 'तालिब'** : कल जो वाकया हुआ उसके सम्बन्ध में इससे पहले कि वह कुछ कहें, मैं यह चाहता हूं कि मैं अपनी पोजीशन और पार्टी की पोजीशन किलयर कर दूं सिर्फ एक मिनिट में ।]

श्री ए० बी० वाजपेयी (उत्तर प्रदेश) : बाद में कहियेगा ।

MR. CHAIRMAN: Please sit down. I have asked him to speak.

SHRI BHUPESH GUPTA (West Bengal): Give him a chance to speak later on.

श्री गंगाशरण सिंह : कल जो कुछ हुआ वह बहुत ही अभद्रतापूर्ण था और कल तक मुझे भी और इस सदन के बहुत से सदस्यों को भी यह पता नहीं था कि जिन लोगों ने वह आचरण किया था उनमें इस सदन के सदस्य भी शामिल थे । आज प्रातःकाल यह पता चला कि कल जो कुछ हुआ उसमें हमारे सदन के एक सदस्य शामिल थे । मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूं कि कल का जो आचरण था उसके लिये हम सब को और इस सदन को बहुत ही खेद है और हम लोगों का यह खेद आप कृपा करके राष्ट्रपति महोदय तक पहुंचाने का कष्ट करे ।

दूसरी चीज़ मैं यह भी कहना चाहता हूं कि कल हिन्दी के नाम पर जो कुछ किया गया उससे गलतफहमी इस सदन में और इस सदन के बाहर देश में नहीं होनी चाहिये । मैं भी उन लोगों में से अपने को समझता हूं जिन्होंने पिछले ३५–४० वर्षों में इसके लिये अपनी शक्ति के मुताबिक काम किया है कि हिन्दी देश की प्राथमिक भाषा हो, केन्द्र की भाषा हो और प्रान्तों में पारस्परिक आदान-प्रदान की भाषा हो । कल का जो आचरण हुआ है वह हिन्दी का अहित करने वाला और अशोभनीय हुआ है और उसके साथ जो हिन्दी के समर्थक हैं, उनका कोई सम्पर्क नहीं है और न उस आचरण का वे समर्थन करते हैं । ये दो बातें मैं आपके सामने स्पष्ट करना चाहता हूं और राष्ट्रपति महोदय के पास हम लोगों की यह भावना आप पहुंचा देने का कष्ट करें ।

SHRI BHUPESH GUPTA: I associate myself and our group with the sentiments that have been expressed. It is most unfortunate that this demonstration should have occurred against the President who shares the national view about making Hindi the language of the Union and who is second to none in promoting the cause. I do maintain, Sir, that the attitude displayed by some of our colleagues at the Joint Session will do disservice to the cause of the propagation of Hindi and to the cause of the fulfilment of the Constitutional objective under article 343 which says that Hindi should be the language of

†[ ] Hindi transliteration.

the Indian Union. Therefore, we are all very sorry that such a thing should have happened and I would ask my colleagues there belonging to the Socialist Party to know how to better promote a noble cause and not to indulge in this kind of childishness which does not bring any good either to the cause or to parliamentary institutions or to our public life. I would request you, Sir, to convey our sentiments of deep sorrow for the demonstration that took place, and on behalf of my colleagues of the Socialist Party—because we are part of Parliament—I apologise to you and to everybody, to the country and the President in particular.

SHRI DAHYABHAI V. PATEL (Gujarat): Sir, I would like to associate myself and my group with the remarks made by the two hon. Members who preceded me over the regrettable incident that took place yesterday.

श्री ए० बी० वाजपेयी : सभापति जी, कल जो कुछ हुआ उसने हम सबको एक दृष्टि से लज्जित किया है । संसदीय लोकतन्त्र कुछ मर्यादाओं की मांग करता है और यदि उसे हमें सफल बनाना है तो कुछ लक्ष्मण रेखायें हैं जिनका किसी भी स्थिति में उल्लंघन नही होना चाहिये और यदि उल्लंघन होगा तो लोकतन्त्र की सीता को अधिनायकवाद का रावण हरण करके ले जायेगा और उसकी रक्षा नही की जा सकती ।

राष्ट्रपति हमारे गणराज्य के सर्वोच्च अधिकारी है । उनके सम्मान की रक्षा होनी चाहिये । अंग्रेजी को हटाने का हमारा संघर्ष चलेगा । किन्तु संसद् के उद्घाटन के अवसर पर राष्ट्रपति के सम्मुख इस ढंग से हिन्दी की लड़ाई लड़ी जाय तो वह न हमारी संसदीय परम्पराओं को सुदृढ़ करेगी और न हिन्दी के हितों को आगे बढ़ाएगी मैं समझता हूं कि जिन माननीय सदस्यों ने यह कार्य किया वे राष्ट्रपति जी की अवहेलना करना चाहते थे, ऐसा नहीं है । लेकिन, अपने अत्यधिक उत्साह मे वे ऐसी बात कर बैठे जिसको हमे टालना चाहिये और बचाना चाहिये ।

आप राष्ट्रपति जी को इस सदन की ओर से आश्वासन दें कि उनके पद की गरिमा को कम करने वाला जो भी कार्य हुआ है उसके लिये हम लज्जित है और उनसे क्षमा चाहते है ।

SHRI A. D. MANI (Madhya Pradesh): May I associate myself with the sentiments which have been expressed by the leader of the Praja-Socialist Party and by the leader of the Communist Party in condemning the outburst of bad manners on the day the President addressed the Joint Session? Sir, the number of independent and unattached Members in this House is few but I can assure you and the House through you that all of us disapprove most firmly of the activities of the Socialist Party in interrupting the proceedings on a solemn occasion. Such interruptions do not help our parliamentary institutions. They undermine public respect for the high office of the President which it is our duty under the Constitution to uphold. I do hope that as a result of what happened, there would be an amendment of the standing orders of this House to prevent recurrence of this unfortunate incident. May I request you, Sir, on behalf of the Members of this House, the unattached Members, to convey to the President our apology for what happened and our sincere expression of regret over the activities of the Members of the Socialist Party?

SHRI B. D. KHOBARAGADE (Maharashtra): I also want to associate myself, on behalf of the Republican Party of India, with the sentiments expressed by Mr. Ganga Sharan Sinha and the other Members here. In my opinion, Sir, yesterday's incident has not helped to promote the cause of Hindi. On the contrary, there has been a set-back and it is a sort of disgrace so far as the honour and prestige

[Shri B. D. Khobaragade.]

of parliamentary institutions are concerned. Siir, I would request you to convey to the President, on behalf of the House, our deep sense of regret over yesterday's incident.

SHRI R. S. DOOGAR (West Bengal): I also express my regret on behalf of my party, over the incident that occurred yesterday, and I associate myself with the sentiment expressed by the Members belonging to the other groups in this House that this House do convey to the President our sense of deep regret over the unfortunate incident. The hon. Member did something which was really against the principles of the Constitution by which he had taken his oath in this House, before taking his seat.

Sir, we are sorry for what has happened, and we request that our deep sense of regret be conveyed to the President.

شری پیارے لال کریل "طالب" :

آنریبل چیرمین صاحب - جو کچھ کل جوئنٹ سیشن میں ہوا - سماج وادی پارٹی کی طرف سے اس کے متعلق میں صرف ایک عرض کرونگا - اور نہایت ادب سے عرض کروں گا حلیمی کے ساتھ عرض کروں گا - میں خود ایڈوکیٹ ہوں اور میں جانتا ہوں کہ ہم کو ہاؤس کے اندر اور ہاؤس کے باہر کس طرح سے سلوک کرنا چاہئے اور کس طرح سے بیہیو کرنا چاہئے - میں خود ہندی نہیں جانتا ہوں اور نہ ہندی لکھ سکتا ہوں مگر اس کا یہ مطلب نہیں کہ ہندی کو جو استھان ملنا چاہئے وہ اس کو حقیقی طور پر نہ ملے اور یہ زبان محض کاغذ پر ہی ایک راشٹر بھاشا بن کر رہ جائے - میں چاہتا ہوں کہ اس کا عملی طور پر پریوگ ہو اس دیش کے اندر صحیح معنوں میں یہ راشٹر بھاشا بنے -

جہاں تک کہ راشٹرپتی جی کی شخصیت اور ذات کا تعلق ہے سوشلسٹ پارٹی کے ہر ایک سدسیہ کے دل کے اندر ان کے لئے وہی عزت ہے جو کہ ہمارے اس سدن کے سدسیوں کے دلوں کے اندر ہوگی - اس طرح سے ہمارے راشٹر کے لئے اور سدن کے لئے جو عزت ہونی چاہئے وہ ہمارے دل میں ہے اور ہمیشہ رہیگی اور ہم کبھی بھی اس عزت پر کٹھارا گھات نہیں کر سکتے ہیں اور ہم چاہتے ہیں کہ سدن کی مریادہ ہمیشہ ہمیشہ قائم رہے - جو کچھ ہم نے کہا ہے وہ ہندی کے متعلق ہماری ایک پالیسی ہے اور اسی پالیسی کے مد نظر ہم نے کیا ہے -

SEVERAL HON. MEMBERS: Shame, shame.

شری پیارے لال کریل "طالب" :

مگر ہمارا کبھی یہ ارادہ نہیں رہا اور نہ کبھی بھی یہ ارادہ رہیگا کہ کسی وقت بھی، کسی طرح سے بھی ہم راشٹر پتی جی کی عزت نہ کریں یا اس سدن کی مریادہ کو قائم نہ رکھیں - یہ ہمارا کبھی ارادہ نہیں رہا ہے - ہم نے جو کچھ کہا ہے اور جو کچھ ہم آئندہ چل کر کریں گے وہ سوچ سمجھ کر کہا ہے اور کرینگے - اگر ہمارا مقصد یہ ہے کہ صحیح طور پر اور حقیقی طور پر ہم ہندی کو اپنو

راشٹر بھاشا بنائیں تو ہم نے جو کچھ کیا ہے وہ اس سدن کے ہر ایک سدسیہ کو کرنا پڑے گا۔

†[**श्री प्यारेलाल कुरील 'तालिब'** : आनरेबिल चेयरमैन साहब ! जो कुछ काल ज्वाइन्ट सेशन में हुआ समाजवादी पार्टी की तरफ से उसके मुतल्लिक़ मैं सिर्फ एक अर्ज़ करूंगा और निहायत अदब से अर्ज़ करूंगा, हलीमी के साथ अर्ज़ करूंगा। मैं खुद एडवोकेट हूं और मैं जानता हूं कि हमको हाउस के अन्दर और हाउस के बाहर किस तरह से सलूक करना चाहिए और किस तरह से बिहेव करना चाहिए। मैं खुद हिन्दी नहीं जानता हूं और न हिन्दी लिख सकता हूं मगर इसका यह मतलब नहीं कि हिन्दी को जो स्थान मिलना चाहिए वह उसको हक़ीकी तौर पर न मिले और यह जुबान महज़ कागज़ पर ही एक राष्ट्रभाषा बन कर रह जाये। मैं चाहता हूं कि इसका अमली तौर पर प्रयोग हो, इस देश के अन्दर सही माइनों में यह राष्ट्रभाषा बने।

जहां तक कि राष्ट्रपति जी की शख्सियत और ज़ात का ताल्लुक़ है सोशलिस्ट पार्टी के हर एक सदस्य के दिल के अन्दर उनके लिए वही इज्ज़त है जो कि हमारे इस सदन के सदस्यों के दिलों के अन्दर होगी। इसी तरह से हमारे राष्ट्र के लिए और सदन के लिए जो इज्ज़त होनी चाहिए वह हमारे दिल में है और हमेशा रहेगी और हम कभी भी इस इज्ज़त पर कुठाराघात नहीं कर सकते है। और हम चाहते हैं कि सदन की मर्यादा हमेशा हमेशा क़ायम रहे। जो कुछ हमने किया है वह हिन्दी के मुतल्लिक हमारी एक पालिसी है और इसी पालिसी के मद्देनज़र हमने किया है।

SEVERAL HON. MEMBERS: Shame, shame.

श्री प्यारेलाल कुरील 'तालिब' : मगर हमारा कभी यह इरादा नहीं रहा और न कभी भी यह इरादा रहेगा कि किसी वक्त भी किसी तरह से भी हम राष्ट्रपति जी की इज्ज़त न करें या इस सदन की मर्यादा को कायम न रखें। यह हमारा कभी इरादा नहीं रहा है। हमने जो कुछ किया है और जो कुछ हम आइन्दा चल कर करेंगे वह सोच-समझ कर किया है और करेंगे। अगर हमारा मक़सद यह है कि सही तौर पर और हक़ीक़ी तौर पर हम हिन्दी को अपनी राष्ट्र-भाषा बनाये तो हमने जो कुछ किया है वह इस सदन के हर एक सदस्य को करना पड़ेगा।]

†[ ] Hindi transliteration.

THE PRIME MINISTER (SHRI JAWAHARLAL NEHRU): Sir, it was not my intention to say anything, but the last speech of the hon. member has laid down, and he has said something, which I would like to draw your attention to, which is highly improper and objectionable in this House, because he has said that what they did yesterday was part of a policy, definite policy, which they are supposed to carry on. Now, we should realise what this is, and I hope you, Sir, as the guardian of the liberties of this House, will take note of what he has said and take proper steps to prevent such a thing being done.

شری پیارے لال کریل ''طالب'' :

میں یہ بتا دینا چاہتا ہوں کہ ہمارا کوئی انٹنشن نہیں ہے کہ راشٹرپتی جی کی عزت پر حملہ کریں یا کبھی بھی کسی قائم پر ان کی عزت کا خیال نہ کریں - نہ ہمارا کبھی یہ ارادہ رہا ہے اور نہ یہ ہماری پالیسی کا کوئی حصہ ہے کہ ہم کسی وقت پر راشٹرپتی جی کے متعلق ایسی کوئی بات کہیں جس سے ان کی شخصیت پر حرف آئے اور نہ ہمارا یہ ارادہ رہا ہے کہ ہم اس سدن کے متعلق یا اس سدن کے سامنے کوئی ایسی بات رکھیں جو سدن کی مریادہ

[شری پیارے لال کریل "طالب"]
کے خلاف ہو یا جوائنٹ سیشن کی مریادہ کے خلاف ہو - یہ کہتے ہوئے میں ایک بار پھر کہوں گا کہ جو کچھ ہم نے کیا ہے وہ ہم نے ٹھیک کیا ہے - ہمارے لئے سدن سے باہر چلے جانے کے علاوہ اور کوئی راستہ نہ تھا -

†[**श्री प्यारेलाल कुरील 'तालिब'**: मैं यह बता देना चाहता हूं कि हमारा कोई इंटेशन नहीं है कि राष्ट्रपति जी की इज्जत पर हमला करें या कभी भी किसी टाइम पर उनकी इज्जत का ख्याल न करें। न हमारा कभी यह इरादा रहा है और न यह हमारी पालिसी का कोई हिस्सा है कि हम किसी वक्त पर राष्ट्रपति जी के मुतल्लिक ऐसी कोई बात कहें जिससे उनकी शख्सियत पर हरफ आये। और न हमारा यह इरादा रहा है कि हम इस सदन के मुतल्लिक या इस सदन के सामने कोई ऐसी बात रखें जो सदन की मर्यादा के खिलाफ़ हो या ज्वाइन्ट सेशन की मर्यादा के खिलाफ़ हो। यह कहते हुए मैं एक बार फिर कहूंगा कि जो कुछ हमने किया है वह हमने ठीक किया है। हमारे लिए सदन से बाहर चले जाने के अलावा और कोई रास्ता न था।]

شریمتی انیس قدوائی (اتر پردیش): مجھے یہ کہنا ہے کہ جس طرح سے اس ہاؤس میں ایک کمیٹی بنا دی گئی ہے...

†[**श्रीमती अनीस किदवई** (उत्तर प्रदेश): मुझे यह कहना है कि जिस तरह से उस हाउस में एक कमेटी बना दी गई है...]

SHRI P. N. SAPRU (Uttar Pradesh): I move that he be suspended from the House.

شری پیارے لال کریل "طالب": وہاں پر یہ قدم اٹھانے کا مقصد صرف یہ تھا کہ وہ ہندی میں تقریر کریں اور ہندی کے بعد وہ کسی دوسری زبان میں کریں یا اپنی ماتر بھاشا میں تقریر کریں - اس کے علاوہ ہمارا کوئی ارادہ نہیں تھا کہ ہم کسی طرح سے ان کی نندا کریں -

†[**श्री प्यारेलाल कुरील 'तालिब'**: वहां पर यह कदम उठाने का मक़सद सिर्फ यह था कि वे हिन्दी में तक़रीर करें और हिन्दी के बाद वे किसी दूसरी जुबान में करें या अपनी मातृभाषा में तक़रीर करें। इसके अलावा हमारा कोई इरादा नहीं था कि हम किसी तरह से उनकी निन्दा करें।]

شریمتی انیس قدوائی : جس طرح سے اس ہاؤس میں کمیٹی بنا دی گئی ہے...

†[**श्रीमती अनीस किदवई**: जिस तरह से उस हाउस में कमेटी बना दी गई है...]

SHRI P. N. SAPRU: I propose that he be suspended from the House.

MR. CHAIRMAN: Dr. Sapru, Mrs. Kidwai is addressing the House.

شریمتی انیس قدوائی: سر، میں یہ کہنا چاہتی ہوں کہ جس طرح سے لوک سبھا میں کمیٹی بنا دی گئی ہے اس معاملہ پر غور کرنے کے لئے اسی طرح اس ہاؤس میں بھی ایک کمیٹی قائم کر دی جائے جو کہ اس معاملہ پر غور کرے اور دیکھے کہ آئیندہ کے لئے کیا چاہئیے -

†[ ] Hindi transliteration.

†[**श्रीमती अनीस किदवाई** : सर, मै यह कहना चाहती हू कि जिस तरह से लोक सभा में कमेटी बना दी गई है, इस मामले पर गौर करने के लिये, उसी तरह इस हाउस में भी एक कमेटी कायम कर दी जाए, जो कि इस मामले पर गौर करे और देखे कि आयन्दा के लिये क्या करना चाहिए ।]

SHRI GANGA SHARAN SINHA: I think, Sir, our regrets should be conveyed to the President and the matter should end here for the time being.

MR. CHAIRMAN: I agree.

SHRI BHUPESH GUPTA: The matter should end here, and I regret that the hon. Member from the Socialist Party should have repeatedly been saying the same thing, and if he indulges in such adolescent tactics, we can ask him to behave properly.

MR. CHAIRMAN: I agree with the views expressed by all sections of the House that the conduct of the Member of this House, who interrupted the President's Address yesterday and walked out, is reprehensible and unbecoming of a Member of Parliament. The President was performing a function enjoined on him under the Constitution, and it should be remembered that the President himself is part of Parliament. He is entitled to the highest respect, and any Member who deviates from decorum and dignity deserves to be chastised. I shall write to the President conveying to him the deep regret of the House on this most regrettable incident.

—

STATEMENT *RE* ACCIDENT IN JAMUNA COLLIERY

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF MINES AND FUEL (SHRI R. M. HAJARNAVIS): Sir, I regret to inform the House that on the morning of Friday, the 15th February, there was a serious accident in one of the new collieries of the National Coal Development Corporation in Madhya Pradesh, namely, Jamuna Colliery. The accident occurred during the driving of the incline in the said mine, and it is reported to have been due to side fall on account of hidden cracks in the side. Six persons died in the accident including the Mine Manager, Mining Sirdar, the Contractor and three other workers who were working at this incline. Further details about the accident are yet to be received. A message of condolence has been sent to the bereaved families, and the N.C.D.C. has been directed to pay *ad hoc* compensation to the families immediately pending the finalisation of the usual compensation.

†[ ] Hindi transliteration.

—

[THE DEPUTY CHAIRMAN in the Chair]

PAPERS LAID ON THE TABLE

TWENTY-FIRST ANNUAL REPORT AND ACCOUNTS OF HINDUSTAN AIRCRAFT LTD., BANGALORE

THE MINISTER OF DEFENCE PRODUCTION IN THE MINISTRY OF DEFENCE (SHRI K. RAGHURAMAIAH): Madam, I beg to lay on the Table, under sub-section (1) of section 619-A of the Companies Act, 1956, a copy of the Twenty-First Annual Report and Accounts of the Hindustan Aircraft Limited, Bangalore, for the year 1961-62, together with the Auditor's Report on the Accounts. [Placed in Library. *See* No. LT-801/63.]

NOTIFICATIONS UNDER THE EMPLOYEES' PROVIDENT FUNDS ACT, 1952

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF LABOUR AND EMPLOYMENT AND FOR PLANNING (SHRI C. R. PATTABHI RAMAN): Madam, I beg to lay on the Table, under sub-section (2) of section 7 of the Employees' Provident Funds Act, 1952, a copy each of the following Notifications of the Ministry of Labour and Employment:—

(i) Notification G.S.R. No. 86, dated the 3rd January, 1963,